# गीता ही विशुद्ध मनुस्मृति

गीता आदिमानव महाराज मनु से भी पूर्व प्रकट हुई है। ''इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्।''(४/१) अर्जुन! इस अविनाशीयोग कोमैंने कल्प केआदिमेंसूर्य से कहा तथासूर्य ने मनुसेकहा।मनु ने उसे श्रवण कर अपनी याददाश्त में धारण किया; क्योंकिश्रवणकी गयीवस्तु मन की स्मृति में ही रखी जासकती है। इसी कोमनु ने राजा इक्ष्वाकुसेकहा।इक्ष्वाकुसेराजर्षियोंनेजाना और इस महत्वपूर्ण काल से यह अविनाशी योग इसी पृथ्वी में लुप्त हो गया। आरम्भ में कहने और श्रवण करने की परम्परा थी। लिखा भी जा सकता है- ऐसी कल्पना नहीं थी। मनु महाराज ने इसे मानसिक स्मृति में धारण किया तथा स्मृति की परम्परा दी। इसलिये गीता और गीतोक्त ज्ञान ही विशुद्ध मनुस्मृतिहै।

भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं- अर्जुन! वही पुरातनयोगमैंतेरेलियेकहने जा रहा हूँ। तू प्रियभक्त है, अनन्य सखा है। अर्जुन मेधावी थे, सच्चे अधिकारी थे। उन्होंने प्रश्न-परिप्रश्नों की शृंखला खड़ी कर दी कि आपका जन्म तो अब हुआ है और सूर्य का जन्म बहुत पहले हुआ है। इसे आपने ही सूर्य से कहा, यह मैं कैसे मान लूँ? इस प्रकार बीस-पचीस प्रश्न उन्होंने किये। गीता के समापन तक उनके संपूर्ण प्रश्न समाप्त हो गये। तब भगवान् ने जो प्रश्न अर्जुननहीं कर सकते थे, जो उनके हित में थे, उन्हें स्वयं उठायाऔर समाधान दिया। अन्ततः भगवान् ने कहा- अर्जुन! क्या तुमने मेरे उपदेश को एकाग्रचित्त हो श्रवण किया? क्या मोह से उत्पन्न तुम्हारा अज्ञान नष्ट हुआ? अर्जुन ने कहा-नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव।।
१८/७३

भगवन्! मेरा मोह नष्ट हुआ। मैं स्मृति को प्राप्त हुआ हूँ। केवल सुना भर नहीं अपितु स्मृति में धारण कर लिया है। मैं आपके आदेश का पालन करूँगा, युद्ध करूँगा। उन्होंने धनुष उठा लिया, युद्ध हुआ, विजय प्राप्त की, एक विशुद्ध धर्मसाम्राज्य की स्थापना हुई और एक धर्मशास्त्र के रूप

में वही आदि धर्मशास्त्र गीता पुनः प्रसारण में आ गयी।

गीता आपका आदि धर्मशास्त्र है। यही मनुस्मृति है जिसे अर्जुन ने अपनी स्मृति में धारणकियाथा।मनु केसमक्षदो कृतियोंका उल्लेख है- एक तो पिता से उपलब्ध गीता, दूसरे वेद मनु के समक्ष उतरे। तीसरी कोई कृति मनु के समय में प्रकट नहीं हुई थी। उस समय लिखने-लिखाने का प्रचलन नहीं था,

कागज कलम का प्रचलन नहीं था। इसीलिये ज्ञान को श्रुत अर्थात् सुनने और स्मृति-पटल पर धारण करने की परम्परा थी। जिनसे मानवों का प्रादुर्भाव हुआ, सृष्टि के प्रथम मानव उन मनु महाराजनेवेदकोश्रुति तथा गीता कोस्मृतिकासम्मानदिया।

गीता मनुस्मृति है। भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा- इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ। (१५/२०) अर्जुन! यह गोपनीय से भी अतिगोपनीय शास्त्र मेरे द्वारा कहा गया। अतः योगेश्वर श्रीकृष्ण की यह वाणी स्वयं में पूर्ण शास्त्र है। अन्य कोई शास्त्र नहीं, कोई अन्य स्मृति नहीं है। समाज में प्रचलित अनेकानेक स्मृतियाँ गीता के विस्मृत हो जाने का दुष्परिणाम हैं। स्मृतियाँ कतिपय राजाओं के संरक्षण में लिखी समाज में ऊँच-नीच की दीवार सृजित करके, शासन-सूत्र को संचालितकरनेकाउपायहैं।मनु के नाम पर प्रचारित तथाकथित मनुस्मृति में मनुकालीन वातावरण का चित्रण नहीं है। मूल मनुस्मृति गीता एक परमात्मा को ही सत्य मानती है, उसमें विलय दिलाती है; किन्तु वर्तमान काल में प्रचलित सैकड़ों स्मृतियाँ परमात्मा का नाम तक नहीं लेतीं, न परमात्मा की प्राप्ति के उपायों पर प्रकाश डालती हैं। वे केवल स्वर्ग के आरक्षण तक ही सीमित रहकर 'न अस्ति'- जो हैं नहीं, उन्हीं को प्रोत्साहनदेतीहैं। परमगतिकाउनमेंउल्लेख तकनहींहै।